ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-6* July- 2021
Innovation The Research Concept

कला में मानवीय संवेदनाएँ (सन्दर्भ :– व्यंग्यचित्रकार आर. के. लक्ष्मण)

Human Sensations in Art (Reference:- Satirist R.K Laxman)

Paper Submission: 02/07/2021, Date of Acceptance: 14/07/2021, Date of Publication: 25/07/2021

अपर्णा श्रीवास्तव
फ्रीलांस आर्टिस्ट
ड्राइंग एंव पेंटिंग विभाग,
दयालबाग शैक्षिक संस्थान
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कला में मानवीय संवेदनाओं का प्रसंग कलात्मक अभिव्यक्ति से सम्बन्धित रहा है। कला में मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करने के विविध माध्यम चित्र, काव्य, नृत्य, गायन, वादन इत्यादि हैं। इन विविध माध्यमों में चित्रकला मानवीय संवेदनाओं को प्रकट करने का श्रेष्ठ माध्यम है। इस चित्रकला में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम व्यंग्यचित्र है। इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध व्यंग्यचित्रकार आर. के. लक्ष्मण का नाम प्रसिद्ध है।

आर. के. लक्ष्मण के व्यंग्य चित्रों में जनसाधारण की मानवीय संवेदनात्मक व्यथा का वर्णन मिलता है। आपने लोकतंत्र की विसंगतियों पर गहरा कटाक्ष किया है, लेकिन इस कटाक्ष के पीछे गहरी मानवीय संवेदना भी है, जो आम आदमी के पक्ष से घटनाओं को देखती है। अपने कार्टूनों से समाचार पत्रों के पृष्ठों और देशवासियों के दिलों पर राज करने वाले जाने माने कार्टूनिस्ट आर. के. लक्ष्मण के व्यंग्य चित्रों ने पाठकों के चेहरों पर मुस्कान लाने का कार्य किया है। आपके कार्टून का चरित्र **"कॉमन मैन"** विश्व प्रसिद्ध है। आपकी कृतियों में व्यक्त जनसाधारण की मानवीय संवेदनाएँ सर्वव्यापी हैं।

The context of human sensibilities in art has been related to artistic expression. Various mediums of expressing human feelings in art are painting, poetry, dance, singing, playing etc. Among these various mediums, painting is the best medium to express human feelings. A powerful medium of expression of human feelings in this painting is caricature. In this context, the famous satirist R. Of. The name of Lakshmana is famous.

R. of. In the satirical paintings of Lakshmana, a description of the human emotional distress of the common man is found. You have taken a deep dig at the anomalies of democracy, but behind this sarcasm is also a deep human sensibility, which looks at the events from the common man's side. Renowned cartoonist R. K., who ruled the pages of newspapers and the hearts of the countrymen with his cartoons. Of. The satirical paintings of Lakshmana brought a smile on the faces of the readers. Your cartoon character "Common Man" is world famous. The human sensibilities of the common man expressed in your works are ubiquitous.

मुख्य शब्द : व्यंग्य चित्र, कलात्मकता, मानवीय संवेदना, अभिव्यक्ति, रेखांकन
Caricature, Artistry, Human Sentiment, Expression, Illustration

प्रस्तावना

कला में मानवीय संवेदनाओं का प्रसंग कलात्मक अभिव्यक्ति से सम्बन्धित रहा है। कला में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्तिकरण के लिए अनेक विविध माध्यम हैं, जिनमें चित्र, काव्य, नृत्य, गायन, वादन इत्यादि हैं। इन विविध माध्यमों में चित्रकला मानवीय संवेदनाओं के प्रकटीकरण का श्रेष्ठ माध्यम है। इस चित्रकला में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम व्यंग्यचित्र है। इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध व्यंग्यचित्रकार आर. के. लक्ष्मण का नाम प्रसिद्ध है

अध्ययन का उद्देश्य

मैसूर के इस प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट या व्यंग्यचित्रकार का जन्म 24 अक्टूबर सन् 1921 ई. को मैसूर में हुआ था। वे अपने परिवार में सभी भाई बहनों में सबसे छोटे तथा छठे स्थान पर थे, तथा उपन्यासकार आर. के. नारायण बड़े भाई थे। आपके पिता एक स्कूल में हेडमास्टर थे। चित्रकला में आपकी रूचि बचपन से ही थी और आप धरती, दीवारों, दरवाजों या फिर जहाँ भी मन होता वहीं रेखांकन करना आरम्भ कर देते थे। अपने शुरूआती दिनों में ही उस दौर की प्रसिद्ध पत्रिकाओं "द स्ट्रैड मैगजीन, पंच, बाइस्टैंडर, वाइड वर्ल्ड" के इलस्ट्रेशन बनाकर स्वंय प्रेरित हुए। परिणामस्वरूप आपने घरों की दीवारों, दरवाजों और फर्श पर कैरीकेचर बनाने शुरू किए। आपने अपने विद्यालय में अपने अध्यापकों का विरूप चित्रण आरम्भ कर दिया।

स्कूल में जब आपने एक बार पीपल की एक पत्ती का चित्र बनाया तो आपके शिक्षक आपसे बहुत प्रभावित हुए, और ड्रॉइंग और पेन्टिंग में एक आर्टिस्ट के रूप में भविष्य में करियर बनाने की सलाह दी। स्कूली शिक्षा के पश्चात् आपने मुंबई के प्रख्यात जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिले के लिए आवेदन किया, लेकिन स्कूल के डीन ने आपके आवेदन को यह कहकर मना कर दिया कि आप में उस स्कूल में अध्ययन करने की योग्यता नहीं है। तत्पश्चात् आपने मैसूर विश्व विद्यालय से अपनी शिक्षा को पूर्ण किया। आपने अपना आरम्भिक करियर स्थानीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में अंशकालिक कार्टूनकार के रूप में आरम्भ किया था। आपने मैसूर महाराजा महाविद्यालय में पढ़ते हुए अपने बड़ेभाई आर. के. नारायण की कहानियों के लिए कार्टून बनाये, जो **"द हिन्दू"** में प्रकाशित हुए। आपका आरम्भिक कार्य स्वराज्य और ब्लिट्ज नामक पत्रिकाओं सहित समाचार पत्रों में प्रकाशित होता रहा।

अध्ययन करने के पश्चात् मुंबई के **"द फ्री प्रेस जर्नल"** में राजनैतिक कार्टूनिस्ट के रूप में नौकरी आरम्भ की। इसके बाद आप **"द टाइम्स ऑफ इंडिया"** से जुड़े।

चित्र सं.–1

इसी अखबार में कार्टून स्ट्रिप **"यू सैड इट"** से आपको पहचान मिली। उस स्ट्रिप में आपने **"द कॉमन मैन"** चरित्र को रेखांकित किया। आपने देश की समस्याओं–**"लोकतंत्र के विकसित होते रूप, भ्रष्टाचार समेत जीवन के विविध पहलुओं"** को रेखांकित करता **"द कॉमन मैन"** स्ट्रिप तकरीबन पांच दशकों तक इन मुद्दों पर तीक्ष्ण कटाक्ष, व्यंग्य करता रहा।

आपने अपनी कार्टून कृति में अतुल्यनीय भारत पर व्यंग्य करते हुए कॉमन मैन के चित्रण से यह स्पष्ट किया है कि –किस प्रकार आम आदमी के जीवन में अनेक समस्याएँ होते हुए भी वह आत्मीयता के साथ मुस्कराते हुए जीवन का आनन्द लेता है। इस व्यंग्य चित्र में आपने देश की अतुल्य धरोहरों को मुख्य स्वरूप में न दिखाकर आम आदमी की समस्याओं को सर्वप्रथम प्रमुख रूप से दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र बनाया है, इस चित्र में स्पष्टतः यह तथ्य दर्शाया गया है कि यदि आम आदमी खुश है तभी भारत देश की कल्पना अतुल्य भारत के स्वरूप में की जा सकती है।

आपने कन्नड़ हास्य पत्रिका कोरवंजी में भी कार्टून चित्रण का कार्य किया। यह पत्रिका सन् 1942 ई. में डॉ. एम. शिवराम के द्वारा स्थापित की गई थी, जो एलोपैथिक चिकित्सक थे तथा बंगलौर के राजसी क्षेत्र में रहते थे। संस्थापक डॉ. एम. शिवराम की यह पत्रिका विनोदी, व्यंग्य लेख और कार्टून के लिए समर्पित की थी। डॉ. शिवराम स्वयं में प्रख्यात कन्नड़ के हास्य रस लेखक थे। उन्होने आपको भी कार्टून बनाने के लिए प्रोत्साहित किया था। आपने मद्रास के जैमिनी स्टूडियोज में ग्रीष्मकालीन रोजगार आरम्भ कर दिया। मुंबई की कार्टून पत्रिका "द फ्री प्रेस जर्नल" में आपके साथ राजनीतिज्ञ एवं कार्टूनिस्ट बाल ठाकरे भी कार्य करते थे। कार्टूनिस्ट आर. के. लक्ष्मण मुंबई के "द टाइम्स ऑफ इंडिया" में कार्य करते रहे तथा आपने यहाँ 50 वर्षों तक कार्य किया। आपका "कॉमन मैन" चरित्र प्रजातंत्र के साक्षी के रूप में चित्रित हुआ।

लक्ष्मण का प्रथम विवाह भरतनाट्यम नर्तकी और फिल्म अभिनेत्री कुमारी कमला लक्ष्मण के साथ हुआ। कुमारी कमला ने अपना फिल्मी करियर बाल कलाकार के रूप में आरम्भ किया था। प्रथम विवाह में तलाक के पश्चात् आपने दूसरा विवाह कर लिया, आपकी दूसरी पत्नी का नाम भी "कमला लक्ष्मण" ही था। वो एक लेखिका थी, जिन्होंने बाल पुस्तकों के लिए भी कार्य किया था।

आपने कला में मानवीय संवेदनाओं के सम्बन्ध में स्वयं कहा है कि–**"कार्टून अनिवार्य रूप से असहमति और शिकायत की कला है। समस्त व्यक्तियों और विषयों को वह एक प्रकार की स्वस्थ और सद्भावपूर्ण खिल्ली (मजाक) की नजर से देखती है, द्वेष–भावना से कभी नहीं।"** इस तथ्य से सम्बन्धित प्रस्तुत चित्र में आपने तत्कालीन सरकार पर व्यंग्य किया है, तथा यह दर्शाया है कि किस तरह बजट के विश्लेषण में विसंगति वाले सभी पक्षों को एक साथ चलाने की कोशिश की गई है जिसके असफल होने की सम्भावना अधिक है, इसका प्रभाव साधारण आदमी की मानवीय संवेदनाओं पर पड़ेगा।

चित्र सं.–2

आप कार्टून की दुनिया में एक क्रान्ति लेकर आये थे। आप कार्टून के चित्रण हेतु नये–नये विचारों को अपनी पुरानी स्टाइल में इस तरह समन्वित करते थे कि आपके कार्टून सदैव एक सशक्त माध्यम के रूप में चर्चा का केन्द्र होते थे, यद्यपि यह भी कहना चाहिए कि आप अपने गुरू डेविड लो से बेहद प्रेरित थे। ब्रिटेन में डेविड लो कार्टून की दुनिया का एक मशहूर नाम हुआ करता था। आपके कार्टून में डेविड की झलक बखूबी देखी जा सकती है। मगर उस दौर में आपका इतना करना भी लोगों के लिए बहुत खास होता था। आपका कार्टून बनाने का आईडिया ही वो काम कर जाता था, जो बड़ी–बड़ी ब्रेकिंग स्टोरी नहीं कर पाती थी।

इसी सन्दर्भ में एक प्रसंग है कि इमरजेंसी के समय आपने बाल ठाकरे का एक कार्टून बनाया था। उस वक्त बाल ठाकरे की छवि मुंबई के राजा की तरह थी। वह जब चाहते, मुंबई बंद हो जाती थी और जब चाहते चलती थी। मगर जब इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी लगाई, तो बाल ठाकरे को भी निशाने पर लिया। अगले दिन के अखबार में आप का कार्टून था, जिसमें आपने बाल ठाकरे के शरीर पर शेर का मुंह लगाया और उसके नाखून काट दिए। इस व्यंग्य में आपकी रेखाओं ने जो बात कही, वह कई बड़ी स्टोरीज से आगे थी। इसके चित्र से आपने बाल ठाकरे की मानसिक स्थिति पर व्यंग्य किया है।

कहा जाता है कि तत्कालीन **भारतीय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू** ने एक बार आपके विषय में कहा था,–**"मैं जब तक लक्ष्मण का कार्टून नहीं देखता, तब तक मेरी सुबह शुरू नहीं होती।"** आपको **कार्टून की दुनिया का शंहशाह** कहा जाता है।

आपकी कार्टून कृतियों में आकृति नहीं अपितु मानवीय संवेदनाएँ प्रमुख हैं। आपकी कार्टून कृतियों के विचारों की भाषा का प्रस्तुतीकरण सरल, सहज, आकर्षक एवं सांकेतिक है। आप साधारण आदमी की मानवीय संवेदनात्मक परिस्थितियों में अन्तर्निहित मूल्यों एवं उद्देश्यों को चित्रित करना चाहते थे। आपने अपनी कृतियों में राजनैतिक तथा आर्थिक मंदी की विपरीत परिस्थितियों पर व्यंग्य किया है कि किस प्रकार राजनैताओं के मध्य स्थापित सत्ता की लालसा में वे उस पद (चुनावी सीट) की मूल गरिमा को भूल जाते हैं। इसी प्रकार आर्थिक मंदी में होने वाली क्षति का साधारण आदमी पर पड़ने वाले नकरात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

चित्र सं.–3

आपने **"द टाइम्स ऑफ इंडिया"** समाचार पत्र में कॉमन मैन के चरित्र को जन्म देकर एक नये इतिहास का आरम्भ किया है। यह चरित्र अत्यन्त संघर्षशील, घटनावाचक, दर्शक तथा भारतीय जगत के राजनेताओं के चरित्रों पर व्यंग्य का निमित्त भी है। इसी क्रम में आपने एक चित्र में सरकार की असफलताओं पर व्यंग्य करते हुए उस क्षेत्र में सूखे की स्थिति का चित्रांकन किया है। आपकी कला में मानवीय संवेदनाओं की परिस्थितिजन्य अभिव्यक्ति को दशकों तक अनुकरण नहीं किया जा सकता। आपकी कार्टून कला में मानवीय संवेदनाओं का चित्रण ही आपके व्यंग्य चित्रकला की विशेषता है।

चित्र सं.–4

आपके कार्टून दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिक, जो आपके बड़े भाई आर. के. नारायण के प्रसिद्ध उपन्यास **"मालगुडी डेज"** पर आधारित सशक्त रेखाचित्रों की याद दिलाते हैं, जो प्रत्येक एपिसोड की शुरूआत में टीवी की स्क्रीन पर दिखाये जाते थे। आपने बड़े भाई नारायण की कहानियों और उपन्यासों के लिए कई रेखांकन तैयार किए और यह क्रम लम्बे समय तक चलता रहा। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि आप स्वयं कार्टूनिस्ट होने के साथ लेखक भी थे।

चित्र सं.–5

आपने "द टाइम्स ऑफ इंडिया" समाचार पत्र में कॉमन मैन के चरित्र को जन्म देकर एक नये इतिहास का आरम्भ किया है। यह चरित्र अत्यन्त संघर्षशील, घटनावाचक, दर्शक तथा भारतीय जगत के राजनेताओं के चरित्रों पर व्यंग्य का निमित्त भी है। इसी क्रम में आपने एक चित्र में सरकार की असफलताओं पर व्यंग्य करते हुए उस क्षेत्र में सूखे की स्थिति का चित्रांकन किया है। आपकी कला में मानवीय संवेदनाओं की परिस्थितिजन्य अभिव्यक्ति को दशकों तक अनुकरण नहीं किया जा सकता। आपकी कार्टून कला में मानवीय संवेदनाओं का चित्रण ही आपके व्यंग्य चित्रकला की विशेषता है।

आप लगातार प्रकाशित होता रहा। कभी–कभार "नवभारत टाइम्स" (हिन्दी) में भी "आप फरमाते हैं" शीर्षक से लक्ष्मण के कार्टून सामने आते रहे। ये कार्टून अलग से तो नहीं बनाए गए, बल्कि अग्रेंजी समाचार पत्र से "यू सेड इट" को हिन्दी में छापा गया होगा। आपके कार्टून का चरित्र आम आदमी अपनी निर्धारित वेशभूषा और सटीक भूमिका में हर जगह दिखाई दिया। इसी बीच दुनिया में चाहे जितना भी विकास हुआ हो, तकनीकी विस्फोट भी भले ही हुआ हो, मगर उस भले आम आदमी में कोई खास अंतर नहीं आया। उसकी वेशभूषा, स्वभाव और जीवन स्थिति में फर्क दिखाई नहीं दिया। आपके इस कार्टून चरित्र के कारण साधारण आदमी भी चर्चाओं में रहने लगा– पाठक प्रत्येक दिन सवेरे एक हाथ में चाय का प्याला थामे, दूसरे

हाथ में "द टाइम्स ऑफ इंडिया" थामते और आपके आम आदमी से मिलकर खुशी प्रकट करते। एक ऐसी खुशी, जो शब्दातीत होती और यह मुलाकात बहुतों की दिनचर्या का जरूरी हिस्सा बनती गई।

एक साक्षात्कार में आपसे प्रश्न किया गया कि **"आखिर व्यंग्य रचनाओं के लिए रोज–रोज आईडियाज आते कहाँ से हैं?"**

इस सीधे सहज प्रश्न का उत्तर देते हुए आपने कहा–**"भारतीय लोकतंत्र की कृपा से व्यंग्य के** आईडियाज खोजने की आवश्यकता ही नहीं हुई वे स्वयं ही मेरे पास आते रहे।

चित्र सं.–6

यह वाक्य स्वयं में ही गहरे व्यंग्य और उसमें छुपी पीड़ा की अभिव्यक्ति करता है। बेशक हमारे महान लोकतंत्र की विसंगतियों पर यह गहरा कटाक्ष है, लेकिन इस कटाक्ष के पीछे गहरी मानवीय संवेदना भी है, जो आम आदमी के पक्ष से घटनाओं को देखती है। इस वर्तमान दौर में अधिकांश समाचार पत्रों में साहित्य, कला और संस्कृति उपेक्षित की जा रही है। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों के मूल्यों का ह्रास हुआ है। भारतीय राजनीति और उसी से जुड़े प्रचार प्रसार माध्यामों पर भी कुछ हद तक इसका साया है। प्राथमिकता और सरोकार व्यक्तिगत स्वार्थों से तय हो रहे हैं। ऐसे में आपके कार्टून कृतियों की प्रासंगिकता अधिक हो जाती है। आपके कार्टून अक्सर राजनेताओं के लिए **"लक्ष्मण रेखा"** का काम करते थे। आपकी कार्टून कृतियों में साधारण आदमी की मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के कारण इन कार्टून कृतियों को **"अंतरात्मा की आवाज"** कहा गया है। आपकी कृतियों में कलात्मक अनुभूति, विषय की गहनता एवं कला तत्वों का सुन्दर समन्वय दर्शनीय है।

इसके अतिरिक्त आपने अन्य रचनाएँ भी की हैं, जिनमें सन् 1954 ई. में **एशियन पेंट्स ग्रुप के शुभंकर गट्टु** की रचना की। **मिस्टर एण्ड मिसेज 55** हिन्दी फिल्म में आपके कार्टून प्रदर्शित हुए।

निष्कर्ष

कला जगत में इन सभी कृतियों के योगदान के लिए समय–समय पर आपको पुरस्कार व सम्मान से अलंकृत किया गया जिनमें–**"इंडियन एक्सप्रेस द्वारा प्रदत्त "बी.डी. गोयनका" पुरस्कार, हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा "दुर्गा रतन स्वर्ण पदक", भारत सरकार द्वारा "पद्म भूषण" तथा सन् 2005 ई. में "पद्मविभूषण", सन् 1984 ई. में "रमन मैग्सेसे" पुरस्कार** आदि। आपने कई पुस्तकों के अतिरिक्त आत्मकथा **"च्लक्ष्मणरेखा"** लिखी। आपकी रेखाओं में साधारण आदमी के लिए सम्मान था। आपके द्वारा रचित कॉमन मैन चरित्र, वह ताकत है जिसे आप जीवन भर संजोते रहे। यही कारण है कि सदियों तक आपको इस बहुमूल्य योगदान के लिए सदैव स्मरण किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Laxman, R.K. (February 1989). The Hotel Riviera, Penguin Group (USA) Incorporated. ISBN- 978-0-14-010796-8.*
2. *He Said it! The Common Men Speaks…, C.S. Nag, WheelMen Press, 2012, ISBN – 0982436165, 9780982436165*
3. *Hindustan times- "Common man bids farewell to its legend", wednasday 28 january, 2015, Press trust of India, New Delhi, page n.- 9.*
4. *The Indian Express- "The philosopher cartoonist" wednasday 28 january, 2015, Shiv Visvnathan, page n.- 11.*
5. *www.google.com*
6. आजकल–"आर.के. लक्ष्मण और आम आदमी"–हरिपाल त्यागी, "श्रृद्धांजलि", मार्च 2015, पृष्ठ सं.–47–48.
7. *दैनिक जागरण– **"कॉमन मैन के कलाकार"**, बुधवार 28 जनवरी 2015, पृष्ठ सं.–14–17.*